आदिवासी, दीकु और एक स्वर्ण युग की कल्पना

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» बिरसा मुंडा और स्वर्ण युग की कल्पना

प्रश्न 1 (आसान). बिरसा मुंडा का संबंध भारत के किस क्षेत्र से था?
उत्तर – छोटानागपुर, झारखंड

प्रश्न 2 (आसान). बिरसा मुंडा के अनुयायी उन्हें क्या मानते थे?
उत्तर – भगवान

प्रश्न 3 (मध्यम). आदिवासियों के लिए 'दीकु' शब्द का क्या अर्थ था?
उत्तर – बाहरी लोग

प्रश्न 4 (कठिन). बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को किन समस्याओं से मुक्ति दिलाने का वादा किया था?
उत्तर – बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को दीकुओं (बाहरी लोगों) की गुलामी, उनके जीवन में बढ़ रही परेशानियों और उनके धर्म पर पड़ रहे प्रभाव से मुक्ति दिलाने का वादा किया था।

» जनजातीय समूहों की जीवन शैलियाँ (औपनिवेशिक पूर्व)

प्रश्न 5 (आसान). औपनिवेशिक पूर्व समय में आदिवासी कौन-कौन से मुख्य तरीकों से जीवन यापन करते थे?
उत्तर – झूम खेती, शिकार और संग्रह, तथा पशुपालन।

प्रश्न 6 (आसान). झूम खेती को और किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर – घुमंतू खेती।

प्रश्न 7 (मध्यम). शिकार और संग्रह करने वाले आदिवासी अपनी ज़रूरत की चीज़ें कहाँ से पाते थे?
उत्तर – वे जानवरों का शिकार करते थे, जंगल से फल, जड़ें और जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करते थे। कुछ चीज़ें स्थानीय बाज़ारों में बेचकर या अदला-बदली करके भी पाते थे।

प्रश्न 8 (कठिन). मध्य भारत के बैगा समुदाय स्वयं को जंगल की संतान क्यों मानते थे और वे मज़दूरी करने से क्यों कतराते थे?
उत्तर – बैगा खुद को जंगल की संतान मानते थे क्योंकि वे मानते थे कि वे केवल जंगल की उपज पर ही जीवित रह सकते हैं। उनके लिए मज़दूरी करना अपमानजनक था क्योंकि इससे उन्हें जंगल से दूर जाना पड़ता था और वे अपनी पहचान खोने जैसा महसूस करते थे।

» घुमंतू झूम खेती

प्रश्न 9 (आसान). झूम खेती में आदिवासी ज़मीन तक धूप लाने के लिए क्या करते थे?
उत्तर – पेड़ों के ऊपरी हिस्से काट देते थे।

प्रश्न 10 (आसान). घास-फूस जलाने से बनी राख में कौन सा तत्व होता था जो मिट्टी को उपजाऊ बनाता था?
उत्तर – पोटाश

प्रश्न 11 (मध्यम). झूम खेती में बीज बोने का तरीका आज के किसानों से कैसे अलग था?
उत्तर – आज के किसान खेत जोतकर और बीज रोपकर बुवाई करते हैं, जबकि घुमंतू किसान खेत को जोतने की बजाय सिर्फ़ बीज बिखेर देते थे।

प्रश्न 12 (कठिन). फ़सल काटने के बाद आदिवासी उस जगह को क्यों कई सालों तक 'परती' छोड़ देते थे?
उत्तर – वे उस जगह को परती इसलिए छोड़ देते थे ताकि ज़मीन अपनी उपजाऊ शक्ति फिर से प्राप्त कर सके और प्राकृतिक रूप से समृद्ध हो जाए।

» शिकारी और संग्राहक जीवन

प्रश्न 13 (आसान). शिकारी और संग्राहक कौन होते थे?
उत्तर – वे आदिवासी समूह जो जानवरों का शिकार करके और जंगल से चीज़ें इकट्ठा करके जीवन चलाते थे।

प्रश्न 14 (आसान). खोंड समुदाय भारत के किस राज्य में रहता था?
उत्तर – ओडिशा।

प्रश्न 15 (मध्यम). खोंड समुदाय के लोग व्यापार कैसे करते थे?
उत्तर – वे जंगल से इकट्ठा की गई चीज़ों (जैसे जड़ी-बूटियाँ, फूल) को स्थानीय बाज़ारों में बेचते थे और बदले में अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदते थे या अदला-बदली करते थे।

प्रश्न 16 (कठिन). शिकारी और संग्राहक समुदायों के लिए जंगल इतना महत्वपूर्ण क्यों था? दो कारण बताइए।
उत्तर – जंगल उनके भोजन, आश्रय और औषधियों का मुख्य स्रोत था, और उन्हें अपनी पहचान तथा संस्कृति का हिस्सा मानते थे।

» पशुपालक आदिवासी समूह

प्रश्न 17 (आसान). कौन-से आदिवासी समूह जानवर पालते थे?
उत्तर – पशुपालक आदिवासी समूह।

प्रश्न 18 (आसान). वे जानवरों को क्यों एक जगह से दूसरी जगह ले जाते थे?
उत्तर – जब एक जगह घास या पानी खत्म हो जाता था तो वे दूसरी जगह जाते थे।

प्रश्न 19 (मध्यम). शिकारी-संग्राहक और पशुपालक आदिवासी समूहों के जीवन में क्या मुख्य अंतर था?
उत्तर – शिकारी-संग्राहक जंगल से शिकार और चीज़ें इकट्ठा करते थे, जबकि पशुपालक जानवर पालकर अपना जीवन चलाते थे।

प्रश्न 20 (कठिन). क्या आप बता सकते हैं कि पशुपालक आदिवासियों को लगातार घूमते रहना क्यों पड़ता था? इसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं?
उत्तर – पशुपालक आदिवासियों को लगातार घूमते रहना पड़ता था क्योंकि उनके पशुओं को चराने के लिए घास और पानी की ज़रूरत होती थी, और एक ही जगह पर रुकने से ये संसाधन खत्म हो जाते थे। इसलिए, वे अपने झुंड के लिए नए चरागाहों की तलाश में मौसम के हिसाब से जगह बदलते रहते थे।

» स्थायी कृषि करने वाले आदिवासी

प्रश्न 21 (आसान). स्थायी कृषि करने वाले आदिवासी एक जगह टिककर खेती कब से कर रहे थे?
उत्तर – उन्नीसवीं सदी से पहले ही।

प्रश्न 22 (आसान). क्या छोटानागपुर के मुंडा समुदाय स्थायी कृषि करते थे?
उत्तर – हाँ।

प्रश्न 23 (मध्यम). स्थायी कृषि करने वाले आदिवासियों का जीवन शिकारी-संग्राहकों से कैसे अलग था?
उत्तर – स्थायी कृषि वाले आदिवासी एक जगह टिककर खेती करते थे और हल का इस्तेमाल करते थे, जबकि शिकारी-संग्राहक भोजन की तलाश में घूमते रहते थे।

प्रश्न 24 (कठिन). अंग्रेज़ों को स्थायी कृषि करने वाले आदिवासी, शिकारी-संग्राहकों के मुकाबले ज़्यादा 'सभ्य' क्यों लगते थे?
उत्तर – अंग्रेज़ों को लगता था कि जो आदिवासी एक जगह टिककर खेती करते हैं, उन्हें नियंत्रित करना और उनसे नियमित लगान इकट्ठा करना आसान होगा। उन्हें घुमंतू लोग कम सभ्य लगते थे।

» औपनिवेशिक शासन के आदिवासी जीवन पर प्रभाव

प्रश्न 25 (आसान). अंग्रेज़ों ने आदिवासियों को स्थायी रूप से क्यों बसाना चाहा?
उत्तर – ताकि उन्हें नियंत्रित करना आसान हो और सरकार को नियमित 'लगान' यानी कर मिल सके।

प्रश्न 26 (आसान). वन कानूनों का आदिवासियों पर क्या मुख्य प्रभाव पड़ा?
उत्तर – वे जंगलों में आज़ादी से घूमने, झूम खेती करने और शिकार करने से वंचित हो गए।

प्रश्न 27 (मध्यम). रेशम उत्पादक आदिवासियों ने व्यापारियों और महाजनों को दुश्मन क्यों मानना शुरू कर दिया था?
उत्तर – क्योंकि व्यापारी उनसे बहुत कम दाम पर रेशम के कृमिकोष खरीदते थे और उन्हें बहुत कम 'फ़ायदा मिलता था', जबकि खुद 'जमकर मुनाफ़ा' कमाते थे, जिससे आदिवासी शोषित महसूस करते थे।

प्रश्न 28 (कठिन). औपनिवेशिक शासन के आदिवासी जीवन पर पड़ने वाले किन्हीं तीन प्रमुख प्रभावों का वर्णन करें।
उत्तर – पहला, मुखियाओं की शक्ति छीनी गई, वे बस नाम के रह गए। दूसरा, झूम खेती पर रोक लगाकर उन्हें एक जगह बसाने की कोशिश की गई, जिससे उनकी आजीविका संकट में आ गई। तीसरा, वन कानून लागू हुए जिससे वे जंगल के संसाधनों का उपयोग नहीं कर पाए और 'मज़बूरन' काम की तलाश में दूर जाना पड़ा।

» आदिवासी मुखियाओं का बदलता स्वरूप

प्रश्न 29 (आसान). ब्रिटिश शासन से पहले आदिवासी मुखिया क्या बनाते थे?
उत्तर – वे ज़मीन और वन प्रबंधन के स्थानीय नियम खुद बनाते थे।

प्रश्न 30 (आसान). अंग्रेज़ों के आने के बाद मुखियाओं को क्या देना पड़ता था?
उत्तर – उन्हें अंग्रेज़ों को नज़राना देना पड़ता था।

प्रश्न 31 (मध्यम). ब्रिटिश शासन के बाद आदिवासी मुखियाओं को ज़मीन के संबंध में क्या अधिकार मिला रहा और क्या छीन लिया गया?
उत्तर – उन्हें कई गाँवों पर ज़मीन का मालिकाना हक तो मिला रहा, लेकिन उनकी शासकीय शक्तियाँ छीन ली गईं।

प्रश्न 32 (कठिन). आदिवासी मुखियाओं के बदलते स्वरूप का उनके समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ा होगा, कोई एक प्रभाव बताओ?
उत्तर – उनके समुदाय में मुखियाओं का सम्मान और प्रभाव कम हो गया होगा, क्योंकि वे अब अपने लोगों के लिए स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकते थे और अंग्रेज़ों के आदेशों को मानने के लिए मजबूर थे।

» घुमंतू काश्तकारों पर ब्रिटिश प्रभाव

प्रश्न 33 (आसान). अंग्रेजों को घूमते-फिरते आदिवासी समूह क्यों पसंद नहीं थे?
उत्तर – उन्हें नियंत्रित करना मुश्किल था और उनसे नियमित लगान नहीं मिल पाता था।

प्रश्न 34 (आसान). अंग्रेजों ने घुमंतू काश्तकारों को स्थायी रूप से बसाने के लिए क्या किया?
उत्तर – उन्होंने ज़मीन के नए नियम लागू किए, ज़मीन को मापा और लगान तय किया।

प्रश्न 35 (मध्यम). घुमंतू काश्तकारों को स्थायी रूप से बसाने की अंग्रेजों की कोशिशें सफल क्यों नहीं हो पाईं?
उत्तर – कई जगहों पर मिट्टी सूखी होने और पानी कम होने के कारण हल से खेती करना मुश्किल था, जिससे फसल अच्छी नहीं होती थी और किसानों को नुकसान होता था। आदिवासियों ने इसका व्यापक विरोध किया।

प्रश्न 36 (कठिन). आपकी राय में, अंग्रेजों को घुमंतू खेती के पारंपरिक तरीकों में दखल देना चाहिए था या नहीं? अपने उत्तर का समर्थन करें।

उत्तर – नहीं, उन्हें दखल नहीं देना चाहिए था। घुमंतू खेती आदिवासियों के जीवन का एक अहम हिस्सा थी और उनकी पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाने की एक विधि थी। अंग्रेजों का दखल उनकी जीवनशैली को बर्बाद कर रहा था और उन्हें नुकसान पहुँचा रहा था।

» वन कानून और उनके प्रभाव

प्रश्न 37 (आसान). अंग्रेजों ने जंगलों पर नियंत्रण करके उन्हें क्या घोषित किया?

उत्तर – राज्य की संपत्ति

प्रश्न 38 (आसान). आरक्षित वनों में आदिवासियों को कौन सी गतिविधियाँ करने की अनुमति नहीं थी? (कोई एक)

उत्तर – झूम खेती / शिकार / फल इकट्ठा करना

प्रश्न 39 (मध्यम). वन कानूनों का आदिवासियों के जीवन पर क्या मुख्य प्रभाव पड़ा?

उत्तर – उनकी आजीविका और जीवनशैली पूरी तरह बदल गई, उन्हें पलायन करना पड़ा।

प्रश्न 40 (कठिन). अंग्रेजों को आरक्षित वनों से क्या फायदा होता था और आदिवासियों को क्या नुकसान?

उत्तर – अंग्रेजों को इमारती लकड़ी (जैसे रेलवे स्लीपर्स) मिलती थी, जबकि आदिवासियों को अपने पारंपरिक अधिकारों और जीवनयापन के साधनों से वंचित होना पड़ा।

» व्यापार और शोषण की समस्या

प्रश्न 41 (आसान). व्यापारी और महाजन आदिवासियों के पास क्यों आते थे?

उत्तर – वन उत्पाद खरीदने, नकद कर्ज़ा देने और मज़दूरी पर रखने के लिए।

प्रश्न 42 (आसान). 18वीं सदी में किस भारतीय उत्पाद की यूरोपीय बाज़ारों में बहुत माँग थी?

उत्तर – भारतीय रेशम की।

प्रश्न 43 (मध्यम). रेशम उत्पादकों को कम कीमत क्यों मिलती थी, जबकि रेशम की माँग ज़्यादा थी?

उत्तर – बिचौलिए आदिवासियों से बहुत कम दाम पर रेशम के कृमिकोष खरीदते थे और उन्हें बाज़ार में कई गुना ज़्यादा दाम पर बेचते थे। आदिवासियों को नकद की ज़रूरत होती थी और वे बाज़ार के बारे में नहीं जानते थे, जिससे उनका शोषण होता था।

प्रश्न 44 (कठिन). व्यापार और शोषण की समस्या ने आदिवासियों के जीवन को कैसे और मुश्किल बना दिया, वन कानूनों से अलग?

उत्तर – वन कानूनों ने उनके जंगल पर अधिकार छीने, जबकि व्यापार और शोषण ने उन्हें आर्थिक रूप से कमज़ोर किया, उन्हें कर्ज़ के जाल में फंसाया। वे अपनी मेहनत का सही दाम नहीं पाते थे और हमेशा कर्जदार बने रहते थे, जिससे उनकी गरीबी और बढ़ती गई।

» काम की तलाश में पलायन

प्रश्न 45 (आसान). उन्नीसवीं सदी के अंत में आदिवासियों को मुख्य रूप से किन दो जगहों पर काम पर लगाया गया?

उत्तर – चाय बागानों और कोयला खदानों में।

प्रश्न 46 (आसान). आदिवासियों को काम पर भर्ती करने वाले लोगों को क्या कहा जाता था?

उत्तर – ठेकेदार।

प्रश्न 47 (मध्यम). काम की तलाश में पलायन करने वाले आदिवासियों की सबसे बड़ी समस्याएँ क्या थीं?

उत्तर – कम वेतन मिलना और वापस घर न लौट पाना।

प्रश्न 48 (कठिन). क्या आदिवासी अपनी मर्ज़ी से काम के लिए पलायन करते थे? कारण सहित समझाओ।
उत्तर – नहीं, वे अपनी मर्ज़ी से पलायन नहीं करते थे। अंग्रेज़ों के वन कानूनों, व्यापारियों और महाजनों के शोषण ने उन्हें इतना मजबूर कर दिया था कि उनके पास जीने के लिए काम की तलाश में घर छोड़ना ही एकमात्र विकल्प बचता था।

» आदिवासी विद्रोह और बिरसा मुंडा का आंदोलन

प्रश्न 49 (आसान). कौन-से दो प्रमुख आदिवासी विद्रोह 19वीं सदी की शुरुआत में हुए?
उत्तर – कोल विद्रोह और संथाल विद्रोह।

प्रश्न 50 (आसान). बिरसा मुंडा का जन्म किस दशक में हुआ था?
उत्तर – 1870 के दशक के मध्य में।

प्रश्न 51 (मध्यम). बिरसा मुंडा ने मुंडा समाज में कौन-से सुधार लाने का आह्वान किया था?
उत्तर – उन्होंने मुंडाओं से शराब छोड़ने, गाँवों को साफ रखने और जादू-टोने में विश्वास न करने का आह्वान किया।

प्रश्न 52 (कठिन). बिरसा मुंडा के आंदोलन के दो मुख्य राजनीतिक उद्देश्य क्या थे, जिनसे अंग्रेज़ परेशान थे?
उत्तर – पहला, मिशनरियों, महाजनों, भूस्वामियों और सरकार को बाहर निकालकर बिरसा के नेतृत्व में मुंडा राज स्थापित करना। दूसरा, अपनी ज़मीन के पारंपरिक अधिकार वापस पाना और अपना साम्राज्य फिर से हासिल करना।

» बिरसा मुंडा का व्यक्तिगत जीवन और आंदोलन

प्रश्न 53 (आसान). बिरसा मुंडा किस जनजातीय समूह से संबंधित थे?
उत्तर – बिरसा मुंडा मुंडा जनजातीय समूह से संबंधित थे।

प्रश्न 54 (आसान). बिरसा मुंडा के आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – उनके आंदोलन का मुख्य उद्देश्य 'मुंडा राज' स्थापित करना था।

प्रश्न 55 (मध्यम). बिरसा मुंडा ने अपने समाज में कौन से सामाजिक सुधार लागू करने की कोशिश की?
उत्तर – उन्होंने शराब पीने और अंधविश्वास को खत्म करने जैसे सामाजिक सुधार लागू करने की कोशिश की।

प्रश्न 56 (कठिन). बिरसा मुंडा के अनुसार, अंग्रेजों के शासन में आदिवासियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा था?
उत्तर – अंग्रेजों के शासन में आदिवासियों की परिचित जीवन पद्धति नष्ट हो रही थी, उनकी आजीविका खतरे में थी और उनका धर्म भी अस्त-व्यस्त हो रहा था।

» बिरसा आंदोलन का महत्व और परिणाम

प्रश्न 57 (आसान). बिरसा आंदोलन के कारण ब्रिटिश सरकार को क्या बदलाव करने पड़े?
उत्तर – भूमि पर दीकुओं के कब्ज़े को रोकने के लिए कानून बनाने पड़े।

प्रश्न 58 (आसान). बिरसा आंदोलन ने आदिवासियों के बारे में क्या साबित किया?
उत्तर – कि वे अन्याय का विरोध करने में सक्षम हैं।

प्रश्न 59 (मध्यम). बिरसा आंदोलन के किन्हीं दो परिणामों को अपने शब्दों में समझाइए।
उत्तर – पहला, इस आंदोलन से ब्रिटिश सरकार को आदिवासियों की ज़मीन पर 'दीकुओं' के कब्ज़े को रोकने वाले कानून बनाने पड़े। दूसरा, इसने यह दिखाया कि आदिवासी लोग अपने ऊपर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने और लड़ने में पूरी तरह सक्षम हैं।

प्रश्न 60 (कठिन). बिरसा आंदोलन भारतीय इतिहास में आदिवासियों के संघर्ष के प्रतीक के रूप में क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – यह आंदोलन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने न केवल आदिवासियों की भूमि के अधिकार की रक्षा के लिए ठोस कानून बनवाए, बल्कि इसने यह भी स्थापित किया कि आदिवासी समुदाय अन्याय के खिलाफ संगठित होकर लड़ सकते हैं। इसने ब्रिटिश सरकार को आदिवासियों की शक्ति का एहसास कराया और भविष्य के आंदोलनों के लिए प्रेरणा का काम किया। इससे आदिवासियों की पहचान और उनकी संघर्ष क्षमता भारतीय इतिहास में मजबूती से स्थापित हुई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. बिरसा मुंडा कौन थे और आदिवासी उन्हें क्यों अपना 'भगवान' मानते थे?

› बिरसा मुंडा छोटानागपुर क्षेत्र के एक आदिवासी नेता थे।

› उन्होंने 1895 में खुद को भगवान का दूत घोषित किया था।

› लोग मानते थे कि उनके पास बीमारियों को ठीक करने और अनाज बढ़ाने जैसी चमत्कारी शक्तियां थीं।

› बिरसा ने आदिवासियों को दीकुओं (बाहरी लोगों) की गुलामी से आज़ाद कराने का वादा किया था।

› इन सब कारणों से आदिवासी उन्हें अपना 'भगवान' मानने लगे और उनके पीछे चलने लगे।

उत्तर – बिरसा मुंडा छोटानागपुर के एक आदिवासी नेता थे जिन्हें चमत्कारी शक्तियों वाला माना जाता था। उन्होंने खुद को भगवान का दूत बताया जो आदिवासियों को बाहरी लोगों से मुक्ति दिलाएगा, इसलिए लोग उन्हें अपना 'भगवान' मानते थे।

उदाहरण 2. झूम खेती करने वाले आदिवासी अपनी ज़मीन पर उगी घास-फूस को क्यों जलाते थे और राख का क्या उपयोग करते थे?

› स्टेप 1: आदिवासी ज़मीन तक सूरज की रोशनी लाने के लिए पेड़ों के ऊपरी हिस्से काट देते थे और घास-फूस जलाते थे।

› स्टेप 2: घास-फूस को जलाने से जो राख बनती थी, उसे वो खाली ज़मीन पर छिड़क देते थे।

› स्टेप 3: इस राख में पोटाश नामक खनिज होता था। यह पोटाश मिट्टी को उपजाऊ बनाता था, जिससे फसल अच्छी होती थी।

› स्टेप 4: इस तरह, वे बिना खाद डाले मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते थे और खेती करते थे।

उत्तर – झूम खेती में आदिवासी घास-फूस जलाते थे ताकि ज़मीन साफ हो और राख से मिट्टी को उपजाऊ बना सकें, क्योंकि राख में पोटाश होता है।

उदाहरण 3. घुमंतू झूम खेती करने वाले आदिवासी मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए क्या करते थे?

› पहला कदम: वे जंगलों में ज़मीन के छोटे भूखंड चुनते थे।

› दूसरा कदम: ज़मीन तक धूप लाने के लिए पेड़ों के ऊपरी हिस्से काटते थे और ज़मीन पर उगी घास-फूस को जलाकर साफ करते थे।

› तीसरा कदम: घास-फूस के जलने से जो राख बनती थी, उसे खाली ज़मीन पर छिड़क देते थे।

› चौथा कदम: इस राख में 'पोटाश' नामक तत्व होता था, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाता था।

उत्तर – वे घास-फूस जलाकर बनी राख को ज़मीन पर छिड़कते थे, जिसमें मौजूद पोटाश मिट्टी को उपजाऊ बनाता था।

उदाहरण 4. खोंड समुदाय के लोग भोजन और अन्य ज़रूरतों के लिए किन चीज़ों पर निर्भर थे? समझाइए।

› पहला, खोंड समुदाय के लोग समूहों में शिकार करते थे और जो मिलता था उसे आपस में बांटते थे।

› दूसरा, वे जंगलों से फल और जड़ें इकट्ठा करके खाते थे।

› तीसरा, खाना बनाने के लिए वे साल और महुआ के बीजों से तेल निकालते थे।

› चौथा, वे जंगली जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल इलाज के लिए करते थे और उन्हें स्थानीय बाज़ारों में बेचते भी थे।

› पांचवां, वे कुसुम और पलाश जैसे फूलों की ज़रूरत पूरी करते थे, जिनकी ज़रूरत बुनकरों और चमड़ा कारीगरों को होती थी।

उत्तर – इस प्रकार, खोंड समुदाय भोजन और अन्य आवश्यकताओं के लिए मुख्य रूप से शिकार, वन उत्पादों के संग्रह (जैसे फल, जड़ें, तेल के बीज, जड़ी-बूटियाँ, फूल) और उनके व्यापार पर निर्भर था।

उदाहरण 5. पशुपालक आदिवासी समूह अपनी आजीविका कैसे चलाते थे और वे किन जानवरों को पालते थे?

› पशुपालक आदिवासी समूह मुख्य रूप से जानवरों को पालकर अपनी आजीविका चलाते थे।

› वे चरवाहे होते थे और मौसम के अनुसार अपने जानवरों के झुंड को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते थे।

› वे मवेशी (जैसे गाय-भैंस) या भेड़-बकरियों जैसे जानवर पालते थे।

उत्तर – पशुपालक आदिवासी समूह जानवरों को पालकर अपनी आजीविका चलाते थे। वे चरवाहे के रूप में मवेशियों या भेड़ों के झुंड को मौसम के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।

उदाहरण 6. स्थायी कृषि करने वाले आदिवासी कौन थे और उनके जीवन में मुख्य अंतर क्या था?

› स्थायी कृषि करने वाले आदिवासी वे थे जो उन्नीसवीं सदी से पहले ही एक जगह पर टिककर खेती करते थे।

› वे बार-बार जगह बदलने के बजाय, साल-दर-साल एक ही खेत में हल से जुताई करते थे।

› उन्हें अपनी ज़मीन पर अधिकार भी मिलते जा रहे थे, जिसे वे अपनी वंशानुगत संपत्ति मानते थे।

› शिकारी-संग्राहक आदिवासियों की तुलना में इनका जीवन अधिक स्थिर और संगठित था।

› उदाहरण के लिए, छोटानागपुर के मुंडा समुदाय में ज़मीन पूरे कबीले की संपत्ति होती थी, जिसका मतलब है कि वे एक जगह पर टिके रहते थे।

उत्तर – स्थायी कृषि करने वाले आदिवासी वे समूह थे जो 19वीं सदी से पहले एक जगह टिककर, हल का उपयोग करके खेती करते थे और अपनी ज़मीन पर वंशानुगत अधिकार रखते थे, जैसे छोटानागपुर के मुंडा। उनका जीवन शिकारी-संग्राहकों की तुलना में अधिक स्थिर था।

उदाहरण 7. औपनिवेशिक शासन ने आदिवासी मुखियाओं के अधिकारों को कैसे प्रभावित किया?

› पहले, आदिवासी मुखियाओं के पास 'महत्वपूर्ण स्थान होता था'। उनके पास आर्थिक ताकत थी और वे अपने इलाके पर नियंत्रण रखते थे, यहाँ तक कि उनकी अपनी पुलिस भी होती थी और वे ज़मीन व वन प्रबंधन के स्थानीय नियम बनाते थे।

› ब्रिटिश शासन में, उन्हें कई गाँवों पर ज़मीन का मालिकाना हक तो मिला, लेकिन 'उनकी शासकीय शक्तियाँ छिन गईं'।

› उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा बनाए गए नियमों को मानने के लिए बाध्य किया गया और उन्हें अंग्रेज़ों को 'नज़राना' यानी एक तरह का कर देना पड़ता था।

› अब वे अंग्रेज़ों के प्रतिनिधि के तौर पर काम करते थे और अपने समूहों को अनुशासन में रखते थे, उनकी पुरानी 'ताकत अब नहीं रही'।

› वे अपने परंपरागत कामों को करने में 'लाचार हो गए'।

उत्तर – औपनिवेशिक शासन ने आदिवासी मुखियाओं को ज़मीन का मालिकाना हक तो बनाए रखा, लेकिन उनकी प्रशासनिक और कानून बनाने की शक्तियाँ छीन लीं, जिससे वे सिर्फ ब्रिटिश सरकार के एजेंट बनकर रह गए और अपनी परंपरागत भूमिका निभाने में अक्षम हो गए।

उदाहरण 8. ब्रिटिश शासन से पहले एक आदिवासी मुखिया के पास कौन-कौन सी शक्तियाँ थीं, और अंग्रेज़ों के आने के बाद उनमें क्या मुख्य बदलाव आए?

› पहले, आदिवासी मुखिया आर्थिक रूप से बहुत मजबूत थे और अपने इलाके पर पूरा नियंत्रण रखते थे।

› उनकी अपनी पुलिस होती थी और वे ज़मीन तथा जंगल के लिए स्थानीय नियम खुद बनाते थे।

› अंग्रेज़ों के आने के बाद, उन्हें अपनी ज़मीन का मालिकाना हक तो मिला रहा।

› लेकिन उनकी शासन करने की शक्तियाँ छीन ली गईं।

› उन्हें ब्रिटिश सरकार के बनाए नियम मानने पड़े और अंग्रेज़ों को नज़राना देना पड़ा।

› वे सिर्फ अंग्रेज़ों के प्रतिनिधि बनकर रह गए और अपने समुदायों को उनके अनुशासन में रखना पड़ा।

उत्तर – ब्रिटिश शासन से पहले आदिवासी मुखिया शक्तिशाली, स्वशासी और अपने इलाकों के नियम-कानून बनाने वाले थे। ब्रिटिश राज में उन्हें ज़मीन का मालिकाना हक तो रहा, लेकिन उनकी शासकीय शक्तियाँ छीन ली गईं, उन्हें ब्रिटिश नियमों का पालन करना पड़ा और वे अंग्रेज़ों के प्रतिनिधि मात्र रह गए।

उदाहरण 9. ब्रिटिश सरकार घुमंतू काश्तकारों को स्थायी रूप से क्यों बसाना चाहती थी और इस प्रयास के क्या परिणाम हुए?

› पहला कारण था 'नियंत्रण': अंग्रेज चाहते थे कि आदिवासी एक जगह रहें ताकि उन्हें आसानी से नियंत्रित किया जा सके, क्योंकि घूमते हुए लोगों को कंट्रोल करना मुश्किल था।

› दूसरा कारण था 'राजस्व': अंग्रेज अपनी सरकार चलाने के लिए नियमित आमदनी चाहते थे। स्थायी किसान लगान (टैक्स) देते, जो सरकार की कमाई का पक्का ज़रिया बनता।

› इसके लिए, अंग्रेजों ने ज़मीन के 'नए नियम' बनाए, ज़मीन को मापा और लगान तय किया।

› लेकिन, यह कोशिश पूरी तरह कामयाब नहीं हुई। खास तौर पर जहाँ की मिट्टी सूखी थी, वहाँ हल से खेती करना मुश्किल था, जिससे किसानों को नुकसान होता था।

› इसलिए, पूर्वोत्तर राज्यों के झूम काश्तकारों ने 'ज़बरदस्त विरोध' किया, जिसके बाद अंग्रेजों को उन्हें कुछ इलाकों में अपनी परंपरागत झूम खेती जारी रखने की 'छूट' देनी पड़ी।

उत्तर – ब्रिटिश सरकार घुमंतू काश्तकारों को नियंत्रित करने और नियमित राजस्व प्राप्त करने के लिए स्थायी रूप से बसाना चाहती थी। उन्होंने नए भूमि नियम लागू किए, परंतु व्यापक आदिवासी विरोध के कारण उन्हें पूर्वोत्तर में झूम खेती की छूट देनी पड़ी।

उदाहरण 10. एक आदिवासी परिवार जो आरक्षित वन के पास रहता है, उसकी रोज़मर्रा की जिंदगी में इन कानूनों से क्या बदलाव आए होंगे? कोई तीन बदलाव बताइए।

› पहला बदलाव: परिवार अब 'झूम खेती' नहीं कर पाएगा। उन्हें कहीं और ज़मीन ढूंढनी पड़ेगी या मजदूरी करनी होगी।

› दूसरा बदलाव: वे 'जंगल से फल, कंद-मूल या औषधियां' नहीं ला पाएंगे, जिससे उनके भोजन और दवा का स्रोत खत्म हो जाएगा।

› तीसरा बदलाव: 'शिकार' पर पाबंदी लगने से प्रोटीन का मुख्य स्रोत भी छिन जाएगा, जिससे कुपोषण का खतरा बढ़ेगा।

उत्तर – झूम खेती, फल-औषधि इकट्ठा करना, और शिकार पर रोक लगने से आदिवासी परिवार की आजीविका और भोजन दोनों पर गंभीर संकट आ गया।

उदाहरण 11. झारखंड के संथाल आदिवासी रेशम के कीड़े पालते थे। व्यापारी एक हजार कृमिकोष (कोकून) के लिए उन्हें 3-4 रुपये देते थे। बाद में यही कृमिकोष बर्दवान या गया में 5 गुना ज़्यादा कीमत पर बेचे जाते थे। बिचौलियों को कितना फ़ायदा होता था और आदिवासियों को क्यों कम मिलता था?

› पहला, व्यापारी आदिवासियों को 1000 कृमिकोष के लिए 3-4 रुपये देता था।

› दूसरा, यही 1000 कृमिकोष बाज़ार में 5 गुना ज़्यादा कीमत पर बेचे जाते थे, यानी 3 रुपये का 5 गुना = 15 रुपये, या 4 रुपये का 5 गुना = 20 रुपये।

› तीसरा, बिचौलियों को 1000 कृमिकोष पर कम से कम (15 - 3) = 12 रुपये का सीधा फ़ायदा होता था।

› चौथा, आदिवासियों को कम मिलता था क्योंकि उन्हें नकद पैसे की ज़रूरत होती थी और उन्हें बाज़ार की सही कीमतों का पता नहीं होता था, वे व्यापारियों के कर्ज़ के जाल में फंसे रहते थे।

उत्तर – बिचौलियों को हर 1000 कृमिकोष पर लगभग 12-16 रुपये का भारी मुनाफा होता था, जबकि आदिवासियों को केवल 3-4 रुपये ही मिलते थे।

उदाहरण 12. उन्नीसवीं सदी के अंत में आदिवासियों को काम के लिए कहाँ-कहाँ भेजा गया और उनकी क्या दुर्दशा हुई?

› सबसे पहले, यह समझना होगा कि आदिवासियों को काम की तलाश में अपने घरों से दूर जाने पर मजबूर किया गया था क्योंकि उनके पास कोई और विकल्प नहीं था।

› दूसरा, मुख्य रूप से उन्हें दो जगहों पर भेजा गया था: 'असम के चाय बागानों' में और 'झारखंड की कोयला खदानों' में।

› तीसरा, इन आदिवासियों को 'ठेकेदारों की मार्फ़त' यानी ठेकेदारों के ज़रिए भर्ती किया जाता था।

› चौथा, उनकी दुर्दशा यह थी कि उन्हें 'बहुत कम वेतन' मिलता था, जितना उनका हक था उतना भी नहीं।

› पांचवां, सबसे दुखद बात यह थी कि 'उन्हें वापस घर भी लौटने नहीं देते थे', एक बार गए तो फंस कर रह गए, अपने परिवार से दूर।

उत्तर – उन्नीसवीं सदी के अंत में आदिवासियों को काम के लिए असम के चाय बागानों और झारखंड की कोयला खदानों में भेजा गया। ठेकेदारों द्वारा भर्ती किए गए इन आदिवासियों को बहुत कम वेतन मिलता था और उन्हें वापस अपने घर लौटने भी नहीं दिया जाता था, जिससे उनकी स्थिति बहुत दयनीय हो गई थी।

उदाहरण 13. बिरसा मुंडा के आंदोलन के मुख्य उद्देश्य क्या थे और अंग्रेज़ों को इससे क्या परेशानी थी?

› पहला कदम, आंदोलन के उद्देश्यों को समझो। बिरसा चाहते थे कि मुंडा समाज शराब पीना छोड़ दे, गाँव साफ रखे और अंधविश्वासों में यकीन न करे। साथ ही, वे दीकुओं (महाजनों, ज़मींदारों, मिशनरियों) को बाहर निकालकर 'मुंडा राज' स्थापित करना चाहते थे।

› दूसरा कदम, देखो कि अंग्रेज़ों को इससे क्या समस्या थी। अंग्रेज़ों को बिरसा के आंदोलन के 'राजनीतिक उद्देश्यों' से सबसे ज़्यादा परेशानी थी। यह आंदोलन सरकार, मिशनरियों, महाजनों और भूस्वामियों को बाहर निकालने की बात कर रहा था, जो सीधे-सीधे ब्रिटिश शासन को चुनौती दे रहा था।

› तीसरा कदम, आंदोलन के प्रभाव पर विचार करो। अंग्रेज़ों को लगा कि यह उनकी सत्ता के खिलाफ एक सीधी बगावत है, इसलिए उन्होंने बिरसा को 1895 में गिरफ्तार कर लिया और आंदोलन को दबाने की पूरी कोशिश की।

उत्तर – बिरसा मुंडा आंदोलन का मुख्य उद्देश्य मुंडा समाज को सुधारना, शराब और अंधविश्वास से दूर करना था, और साथ ही, दीकुओं (महाजनों, ज़मींदारों, मिशनरियों) को भगाकर बिरसा के नेतृत्व में 'मुंडा राज' स्थापित करना था। अंग्रेज़ों को इसके राजनीतिक उद्देश्यों से परेशानी थी क्योंकि यह सीधे उनकी सत्ता और उनके द्वारा लाए गए नियमों के खिलाफ था।

उदाहरण 14. बिरसा मुंडा के आंदोलन के मुख्य लक्ष्य क्या थे?

› पहला लक्ष्य था दीकुओं (बाहरी लोगों) को बाहर निकालना।

› दूसरा लक्ष्य था 'मुंडा राज' की स्थापना करना, यानी मुंडाओं का अपना शासन।

› तीसरा, अपने समाज में सामाजिक सुधार लाना, जैसे शराबबंदी और अंधविश्वास को खत्म करना।

उत्तर – बिरसा मुंडा के मुख्य लक्ष्य थे दीकुओं को बाहर निकालना, मुंडा राज की स्थापना करना और अपने समाज में सामाजिक सुधार लाना।

उदाहरण 15. बिरसा आंदोलन के किन्हीं दो महत्वपूर्ण परिणामों की चर्चा कीजिए।

› पहला परिणाम: बिरसा आंदोलन के कारण ब्रिटिश सरकार को ऐसे कानून बनाने पड़े जिससे 'दीकु' (बाहरी लोग) आदिवासियों की ज़मीन पर आसानी से कब्ज़ा न कर सकें। यह आदिवासियों की भूमि सुरक्षा के लिए एक बड़ी जीत थी।

› दूसरा परिणाम: इस आंदोलन ने आदिवासियों को यह आत्मविश्वास दिया कि वे अन्याय के खिलाफ खड़े हो सकते हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं। यह दर्शाता है कि आदिवासी लोग अपनी समस्याओं के विरुद्ध आवाज़ उठाने में सक्षम हैं।

उत्तर – बिरसा आंदोलन के दो महत्वपूर्ण परिणाम थे: भूमि सुरक्षा के लिए कानूनों का निर्माण और आदिवासियों की अन्याय के खिलाफ विरोध करने की क्षमता का प्रदर्शन।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बिरसा मुंडा का उदय और उनकी 'स्वर्ण युग' की कल्पना एक महत्वपूर्ण विषय है। बोर्ड परीक्षाओं में इस पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, खासकर उनके दावों और आदिवासियों द्वारा उन्हें भगवान मानने के कारणों पर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'आदिवासी जीवन शैली' पर छोटे नोट या अंतर बताने वाले प्रश्न के रूप में आता है, खासकर 'झूम खेती' और 'स्थायी खेती' के अंतर पर ध्यान दें।

• यह प्रश्न 'आदिवासी जीवन शैलियों' के तहत अक्सर पूछा जाता है, खासकर घुमंतू खेती की प्रक्रिया और उसके प्रभावों पर।

• खोंड समुदाय का उदाहरण देकर शिकारी और संग्राहक जीवनशैली को विस्तार से समझाना, परीक्षा में अच्छे अंक दिला सकता है।

• यह प्रश्न 'आदिवासियों के विभिन्न समूहों' पर अक्सर आता है, इसलिए स्थायी और घुमंतू कृषि वाले आदिवासियों के बीच के अंतर को अच्छे से समझना बहुत ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पूछा जाता है कि ब्रिटिश शासन से पहले और बाद में आदिवासी मुखियाओं की स्थिति में क्या अंतर आया। इसे बिंदुवार याद रखें।

• यह सवाल बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि ब्रिटिश सरकार घुमंतू काश्तकारों को स्थायी रूप से क्यों बसाना चाहती थी और इसके क्या परिणाम हुए। इसके कारणों और परिणामों को बिन्दुवार याद कर लें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पूछा जाता है कि 'वन कानूनों का आदिवासियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?' उत्तर में आपको झूम खेती, शिकार, फल इकट्ठा करने पर पाबंदी और पलायन के बारे में विस्तार से लिखना होगा।

• रेशम उत्पादकों के उदाहरण को अच्छे से समझ लेना, क्योंकि यह शोषण की प्रक्रिया को समझाने के लिए एक महत्वपूर्ण केस स्टडी है।

• बिरसा मुंडा के आंदोलन के उद्देश्य और उसके महत्व पर अक्सर बोर्ड परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से समझना।

• बिरसा मुंडा का आंदोलन बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उनके लक्ष्यों और सुधारों को विस्तार से याद रखना।

• बिरसा आंदोलन के महत्व और परिणामों पर सीधे प्रश्न आते हैं, इसलिए इन दो मुख्य बिंदुओं को अच्छे से याद कर लेना।

एक नज़र में रिवीज़न

› बिरसा मुंडा: झारखंड, चमत्कारी शक्तियाँ, भगवान का दूत, दीकुओं से मुक्ति, स्वर्ण युग.

› औपनिवेशिक पूर्व आदिवासी: झूम खेती, शिकार/संग्रह, पशुपालन मुख्य जीवन शैलियाँ थीं।

› घुमंतू झूम खेती: पेड़ काटना, घास जलाना, राख से मिट्टी उपजाऊ बनाना, बीज बिखेरना।

› वन उत्पादों पर निर्भर आदिवासी, शिकार व संग्रह मुख्य कार्य, जैसे खोंड समुदाय।

› स्थायी कृषि आदिवासी: एक जगह टिककर खेती, हल का प्रयोग, ज़मीन पर वंशानुगत अधिकार।

› मुखियाओं की शासकीय शक्तियाँ छिन गईं; अंग्रेज़ों को नज़राना देना पड़ा।

› घुमंतू काश्तकारों को अंग्रेज स्थायी बसाना चाहते थे, राजस्व हेतु; विरोध हुआ, कुछ छूट मिली।

› ब्रिटिश वन कानून: जंगल राज्य की संपत्ति, आदिवासियों की पारंपरिक गतिविधियां बंद।

› व्यापारियों-महाजनों द्वारा आदिवासियों का शोषण, रेशम उत्पादकों का उदाहरण।

› आदिवासी विद्रोह - शोषण के खिलाफ, बिरसा मुंडा - मुंडा राज।

› बिरसा मुंडा: मुंडा राज, दीकु विरोध, सामाजिक सुधार।

› बिरसा आंदोलन: भूमि कानून बने, आदिवासियों की विरोध क्षमता सिद्ध हुई।